प्यारी मदाम मौत

प्रभात

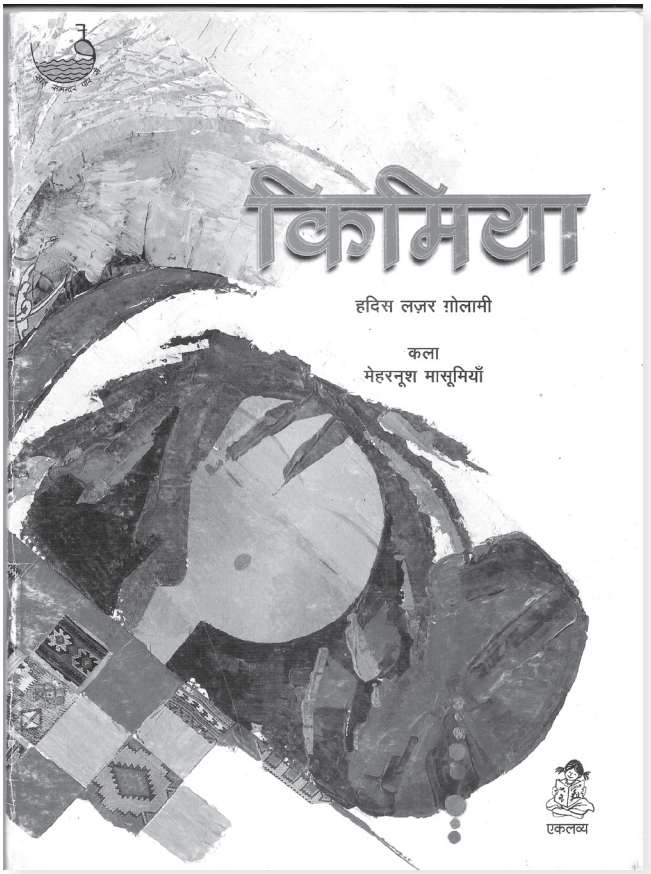

किमिया

लेखक : हदिस लज़र ग़ोलामी

कला : मेहरनूश मासूमियाँ

अनुवाद : दीपाली शुक्ला

प्रकाशक : एकलव्य प्रकाशन

क्या बच्चों को ऐसी किताबें पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए जिनमें मृत्यु होती हो, या जो मृत्यु सम्बन्धी वर्णनों को पेश करती हों? कुछ लोग कहते हैं, "नहीं।" उनकी मान्यता रहती है कि इससे बच्चे के कोमल मन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। उसे अभी से मृत्यु के बारे में बताना, जल्दबाज़ी भरी ज़्यादती है। इस तरह की मान्यता रखने वाले लोगों से पूछा जाए कि और क्या-क्या ऐसा है जो बच्चों को अभी नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। बिना किसी सोच में पड़े वे बता देंगे कि ऐसी किताबें पढ़ने को नहीं देनी चाहिए जिनमें हिंसा हो, ऐसी भी नहीं पढ़वानी चाहिए जिनमें प्रेम हो और ऐसी भी नहीं जो हमारे खानपान, रहन-सहन के अनुकूल न हों। लोगों की यह नकारात्मकता कभी-कभी तो साम्प्रदायिक हदों को छूने लगती है। वे मुखर होकर कहते तो नहीं लेकिन उनके बौद्धिक विमर्श का सार यही निकलता है कि ऐसी किताब नहीं पढ़वानी चाहिए जिसमें जिन्ना टोपी का ज़िक्र हो, क्योंकि वह हिन्दूवादी रुझानों वाली सरकार को पसन्द नहीं आएगा। तो क्या सरकारों की पसन्द और नापसन्दगी को भी ज़ेहन में रखकर बच्चों के लिए किताबें चुननी होंगी?

ये सवाल मेरे ज़ेहन में इसलिए आ रहे हैं क्योंकि ऐसे कुछ उदाहरण मेरे अनुभव का हिस्सा रहे हैं। *बरास्ता तरबूज़* किताब किशोर मन में विकसित होती प्रेम की भावनाओं की बेजोड़ कहानी है। अत्यन्त संवेदनशील और सौन्दर्यपूर्ण तरीक़े से लेखक ने इन भावनाओं को शब्द दिए हैं। लेकिन एक संस्था ने अपने पुस्तकालयों से उस किताब को इसलिए वापस ले लिया क्योंकि "समुदाय को ये लग सकता है कि पुस्तकालयों में बच्चों को शिक्षा के बजाय प्रेम कहानी पढ़वाई जा रही है।" जैसे कि शिक्षा के उद्देश्यों में प्रेम के लिए कोई स्थान ही न हो। जहाँ ऐसी किसी किताब के विरोध में कोई स्वर उठ भी रहा है तो पुस्तकालय का तो काम ही, ऐसी किताब की कितनी ज़्यादा ज़रूरत है, इस बात को समझना और इसकी ज़रूरत के बारे में लोगों को जागरूक करना है। यह एक लम्बा, थकाऊ और श्रम भरा रास्ता हो सकता है। इसलिए सबसे आसान यही लगता है कि कौन झंझट मोल ले। *सिर का सालन, मुकंद और रियाज़,* आदि को लेकर भी कुछ इसी तरह के अनुभव रहे हैं।

मृत्यु, हिंसा, प्रेम, सामाजिक-सांस्कृतिक भेद बच्चों के परिवेश और उनके अपने जीवन की वास्तविकताएँ हैं। यह सब वे अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में घटित होते हुए देखते हैं। जो कुछ भी बच्चों के परिवेश और जीवन में है, उनके आन्तरिक और बाहरी अनुभव जगत का हिस्सा है, उसे बच्चों से किताबों में छिपाने की कोई वजह दिखाई नहीं देती है। देखने वाली बात यही होनी चाहिए कि जीवन की इन वास्तविकताओं को कोई किताब प्रस्तुत किस तरह से कर रही है। अगर कोई किताब संवेदनशील तरीक़े से इन विषयों को जीवन्त कर रही है, इन मुद्दों पर विचार-विमर्श और खुली बहस के लिए अवसर पैदा कर रही है ताकि बच्चे तर्क की रोशनी में अपनी कोई राय बनाने की ओर बढ़ सकें, तो इन्हें नहीं पढ़वाने का कोई कारण नहीं है। मेरे

ही नहीं, बच्चों के साथ किताबों पर काम करने वाले तमाम लोगों के अनुभव ये कहते हैं कि इन विषयों पर बड़ों के बजाय बच्चों के साथ ज़्यादा अच्छी चर्चा सम्भव हो पाती है– ज़्यादा जीवन्त और सृजनात्मक।

एकलव्य ने 'सात समन्दर पार से' शृंखला के तहत *नीले लोग, दोस्त, जल्द बहुत जल्द* आदि कुछ कमाल की किताबें प्रकाशित की थीं। उस शृंखला की एक किताब है– *किमिया*। हदिस लज़र ग़ोलामी की लिखी इस कहानी को किताब में मेहरनूश मासूमियाँ के चित्रों ने भी उतने ही कमाल ढंग से कहा है। इसे हिन्दी में दीपाली शुक्ला ने अनूदित किया है। यह 2016 में हिन्दी में आ चुकी थी। आप में से बहुतों ने इसे पढ़ भी लिया होगा। अगर आप इसे पढ़ चुके हैं तो ज़ाहिर है आप भी किमिया की मौत का किमिया की तरह ही आनन्द ले चुके हैं। कहानी की मुख्य किरदार, छोटी बच्ची किमिया, मदाम मौत से अपनी टूटी टाँग जुड़वाने के बाद गहरी नींद में सो जाती है। और मदाम मौत को सोती हुई लड़कियों को नींद से उठाने की आदत नहीं थी। फिर न जाने कैसे किमिया का नाम मौत की फ़ेहरिस्त से ग़ायब हो गया था। सो अब तो किमिया को अपने साथ ले जाने की उसके पास कोई वजह भी नहीं रह गई थी। क्या इसीलिए प्यारी मदाम मौत ने आशंका ज़ाहिर की थी कि "मैं अपनी ज़िन्दगी में हमेशा लड़कियों के द्वारा छली गई हूँ।"

यह एक फ़न्तासी है, स्वप्न कथा, मौत जिसके फेर में फँसकर रह जाती है, ठगी जाती है और उसे ठगे जाने का अफ़सोस भी नहीं है। किमिया और मौत दोनों के लिए ही इससे अच्छा क्या हो सकता है। लेखक के लिए ऐसी दिलचस्प कथा की कल्पना करने और बुनने से बेहतर क्या हो सकता है। पाठक के लिए इसे पढ़ने से बेहतर क्या हो सकता है। मैंने इसे बार-बार पढ़ा है। और हर बार इसे पढ़ लेनेभर से मुझे रच लेने जैसा सुख मिला है। यही सृजन की उपलब्धि है।

मैं इसे पढ़ने के बाद सोचने लगा कि छोटी बच्ची किमिया की ज़िन्दगी में किसी रात मौत फिर आई होगी तो उसके और मदाम मौत के बीच क्या गपशप हुई होगी, और किमिया ने मदाम मौत से इस बार अपना कौन-सा ज़रूरी और नाज़ुक काम करवा लिया होगा। यह कितनी मज़ेदार बात है कि किसी किताब को पढ़ लेने के बाद मन-ही-मन आप फिर-फिर उसे पढ़ते रहें। दोस्तों के बाद किताबें ही हैं जो आपके भीतर इतनी जगह बना लेती हैं कि आप कभी-कभी तो ख़ुद से ज़्यादा उनके बारे में सोचने-विचारने लगते हैं। लेखक ने कहानी में मौत को दूसरे मुख्य किरदार के रूप में प्रस्तुत कर कहानी की पठनीयता को पंख लगा दिए हैं। वैसे भी कहानी में किमिया और मौत के अलावा तीसरा कोई किरदार है भी नहीं।

किमिया के चित्रों में एक अलग ही नयापन, अनोखापन है। चित्र धूप के पानी से अभी-अभी नहाकर निकले-से लगते हैं। रंगों का ऐसा उजला प्रयोग मानो उनमें से जीवन की रोशनी फूटती हो। चित्रों में जीवन्त रोशनी इसलिए और भी आकर्षक हो उठती है कि कहानी मृत्यु पर है– "सब नींद में थे जब किमिया मरी, ख़ुद किमिया भी।" सपनों में हम जो दृश्य और रंग देखते हैं और जागने पर पकड़ में न आने वाली जिस गति में देखते हैं, उसे चित्रों में ला सकना कैसा काम रहा होगा! उसी काम को इस कहानी के चित्रकार ने सम्भव किया है। चीज़ें कैसे गड्ड-मड्ड और उलझी हुईं लेकिन सपने की तरह सुन्दर भी। यही बात इन चित्रों में देखी जा सकती है।

सभी चित्र एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताब किमिया से लिए गए हैं।

प्रभात शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं। दो कविता संग्रह *अपनों में नहीं रह पाने का गीत* साहित्य अकादमी से व *जीवन के दिन* राजकमल से प्रकाशित। बच्चों के लिए कविता, कहानियों की कई किताबें प्रकाशित। विभिन्न लोक भाषाओं में बच्चों के लिए ढेर सारी किताबों का पुनर्लेखन-सम्पादन। युवा कविता समय सम्मान, 2012, सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार, 2010, बिग लिटिल बुक अवॉर्ड-2019।

सम्पर्क : prabhaaat@gmail.com

किमिया किताब का अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद दीपाली शुक्ला ने किया है। आइए, जानते हैं उनके अनुभव किताब के बारे में...

ज़िन्दगी और जीवटता की बुनावट : *किमिया*

दीपाली शुक्ला

जब पहली बार यह किताब हाथ में आई तो इसका शीर्षक यह इशारा कर रहा था कि कहानी एक लड़की के बारे में है, और आवरण पर बना चित्र भी इस बात को पुख़्ता कर रहा था। पहली बार इसको जब पढ़ा तो लगा कि कहानी बेहद परतदार है और इसके चित्र तमाम रंगों को समेटते हुए भी बेहद सादगीभरे हैं। कहानी में जो घट रहा है, क्या वो केवल किमिया का ख़याल है या इसके इतर मौत की हक़ीक़त है?

इसके बाद इस कहानी का हिन्दी अनुवाद करने की प्रक्रिया में इसको मैंने कई बार पढ़ा, चित्रों को देखा-पढ़ा। एक मज़ेदार हिस्से पर मैं पढ़ते समय बार-बार रुक जाती– यह हिस्सा था जब मौत और किमिया आपस में संवाद कर रही हैं। एक वयस्क और एक बच्ची के बीच का संवाद। मौत को अपना काम करना है, और वह है किमिया को ले जाना। और किमिया है कि बेहद संजीदगी और परिपक्वता के साथ अपने तर्क रखते हुए अपनी भावनाओं को भी साझा कर रही है। इस हिस्से से आगे कहानी ऐसे मोड़ पर ख़त्म होती है जहाँ से पाठक किमिया की ज़िन्दगी में काफ़ी गहरे तक दाख़िल हो जाता है।

एक लड़की और मौत की सीधी बातचीत– मौत की अपने काम के प्रति निष्ठा और किमिया का अपनी हसरतों और सपनों को हक़ीक़त में ढालने का हौसला। जब-जब कहानी को पढ़ा, यह सामने आता गया। इन सबके साथ यह सवाल भी मन में उभर रहे थे कि जिन पाठकों के लिए यह किताब प्रकाशित होने वाली है, वो इसको कैसे देखेंगे-समझेंगे। मौत को लेकर जिस तरह से हमारी मान्यताएँ, डर हैं, उनको यह किताब किस तरह से सम्बोधित करेगी। इस तरह का बाल साहित्य कम ही रचा जा रहा है और फिर यह भी कि वयस्कों, ख़ासकर जो अभिभावक हैं, शिक्षक हैं या बच्चों के साथ काम करते हैं, के भीतर मृत्यु को लेकर जिस तरह की धारणाएँ हैं, वो उन पूर्वाग्रहों के साथ इस किताब को कैसे देखेंगे और बच्चों के साथ इस किताब पर कैसे संवाद करेंगे?

सम्पादकीय टीम के दूसरे साथियों की भी कुछ ऐसी प्रतिक्रियाएँ थीं। जब विचारों की उथल-पुथल बढ़ गई, तब शाबाविज़ पब्लिकेशन्स की फ़ारिदेह

ख़ल्अतबरी से मैंने इस किताब को विकसित करने के पीछे की सोच को जानना चाहा। उस समय फ़ारिदेह ने जो साझा किया था, वो कुछ इस तरह से था : हदिस लज़र ग़ोलामी की यह कहानी उम्मीदों से भरी कहानी है और इस बात को सामने रखती है कि कई बार बहुत ही कठोर दिखने वाले लोग भी आपकी मदद कर सकते हैं।

किमिया एक ऐसी बच्ची है जो बाक़ी बच्चों की तरह ही दौड़ना-भागना चाहती है और अपनी शारीरिक दिक़्क़त को लेकर मायूसी से नहीं भरी है। वहीं दूसरी ओर, मदाम मौत अपने काम को करने आई हैं और उनकी भूमिका को देखें तो उनको जो काम दिया गया है, उसे करने में जुटी हैं, पर वो किमिया के प्रति कठोर नहीं हैं। और उससे बात करते समय वो अपने तर्क भी रख रही हैं। मदाम मौत ने किमिया के प्रति जो नरमी दिखाई, उसके एवज में उन्हें भी दण्डित नहीं किया जा रहा। इस कहानी में मदाम मौत का चित्र जिस तरह से खींचा गया है, वो आमतौर पर कहानियों में मिलने वाली मृत्यु की छवियों से एकदम फ़र्क़ है। हमेशा ये माना जाता रहा है कि मौत कोई भयावह चीज़ है, जबकि यह तो ज़िन्दगी का एक हिस्सा है, तो इससे घबराना क्यों? बच्चों के साथ, और बच्चे ही क्यों, हम बड़ों को आपस में भी इस वास्तविकता पर बात करने की ज़रूरत है। जहाँ जीवन कठिन है, वहाँ भी मौत को लेकर बच्चे क्या सोचते हैं? किमिया का किरदार जीवटता और हौसले से भरा है। जो उसके साथ घटा है और घट रहा है, वह उस मुश्किल में भी डर नहीं रही है। बस, अपनी एक ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए एक वयस्क से तर्क कर रही है, और उसमें कामयाब भी हो रही है।

मानवीय संवेदनाओं की गहरी बुनावट इस किताब में है और इसलिए कई बार इसको पढ़ते हुए मेरी आँखों के आगे संघर्ष वाले इलाक़ों के बच्चों के दृश्य भी जीवन्त हो उठे। उनको जानने के बाद फिर किमिया के बारे में एक नए सिरे से सोचा और कहानी में कुछ नए रास्ते भी दिखे। पाठक से आगे बढ़ते हुए अनुवादक के बतौर जब इसपर काम किया तो बार-बार यह ध्यान रखा कि कहानी का मर्म बना रहे और शब्दों का कमाल भी।

एक और बढ़िया बात जो लगती है कि इस किताब के चित्र किमिया के अलग-अलग मूड को दर्शाते हैं। उसकी पीड़ा, ख़ुशी, सब चित्रों में झलकती है। अलग-अलग रंगों के शेड्स हैं और जीवन का हरा रंग काफ़ी प्रभावी है। इसमें किमिया की चादर में पैचवर्क के रूप में ईरान के कालीनों की भी झलक मिल जाती है।

दीपाली शुक्ला एकलव्य फ़ाउण्डेशन के प्रकाशन कार्यक्रम से जुड़ी हैं। उनका रीडिंग और लाइब्रेरी के कामों से भी जुड़ाव है। उन्हें बाल साहित्य पढ़ना व इसके बारे लिखना पसन्द है।

सम्पर्क : deepalishukla99@yahoo.com

लाइटनिंग

कमलेश चंद्र जोशी

पढ़ना सीख रहे छोटे बच्चों के लिए बिग बुक तैयार की जाती हैं। इनको विकसित करने का उद्देश्य यह रहता है कि बच्चों का छपी सामग्री से जुड़ाव बने और वे किताबों को देखने, उलटने-पलटने, ख़ुद से पढ़ने के लिए प्रेरित हों। *लाइटनिंग* जैसी बिग बुक का स्कूली बच्चों से वास्ता बहुत कम पड़ता है। इस तरह की सामग्री स्कूलों में बहुत कम दिख पाती है। *लाइटनिंग* किताब को देखकर बच्चे पहले इस बात को लेकर ख़ुश होते हैं कि अरे, इतनी बड़ी किताब हमने पहले नहीं पढ़ी। यह किताब रणथम्भौर के जंगल में रहने वाली *लाइटनिंग* नाम की मशूहर बाघिन के रोज़मर्रा के जीवन की कहानी है। किताब की विषयवस्तु बच्चों से गहरे से जुड़ी हुई है और उन्हें नया अनुभव देने वाली भी है। बच्चों के लिए पढ़ना सीखने के शिक्षणशास्त्र के नज़रिए से भी देखें तो उसमें बच्चों के लिए अनुमान लगाने और किसी समस्या के हल सोचने के अच्छे मौक़े हैं। किताब के चित्र बहुत आकर्षक हैं और बच्चे इन चित्रों की डिटेल में डूब जाते हैं।

किताब में जंगल के चित्र को देखते हुए बच्चे बताते हैं कि इसमें साँप है, हिरन है, चिड़िया है और मन्दिर भी है। इसके साथ चित्रों में लाइटनिंग की दिनचर्या को अलग-अलग समय में देखना, उससे रिश्ता बनाने में बच्चों की बहुत मदद करता है। इससे लाइटनिंग उनके बीच जगह बना लेती है। यहाँ यह भी स्थापित होता है कि पूरी कायनात को ख़ूबसूरत बनाने में पशु-पक्षियों की भी जगह है।

जंगली जानवरों के प्रति हमारे मन जो एक सोच होती है कि वे ख़तरनाक होते हैं और हमला कर देते हैं, किताब से यह छवि भी कहीं टूटती है और उनके प्रति संवेदनशीलता

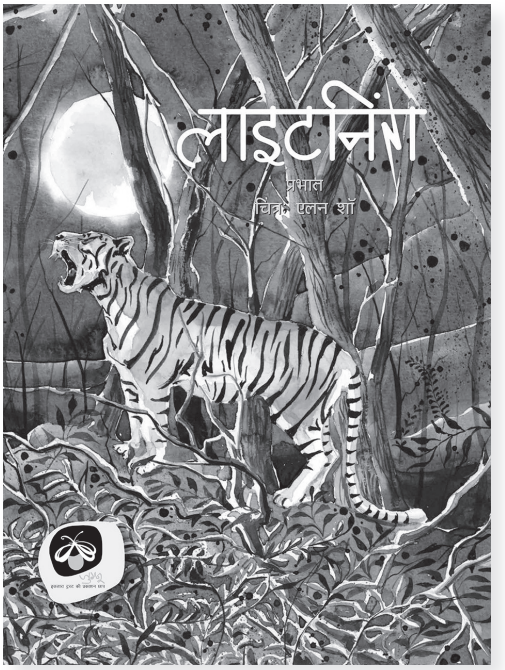

लाइटनिंग

लेखक : प्रभात

प्रकाशक : जुगनू तक्षशिला की प्रकाशन छाप

का भाव उभरता है। उत्तराखंड के अख़बारों व समाचारों में अकसर यह पढ़ने को मिलता रहता है फलाँ जगह बाघ / गुलदार (तेन्दुआ) ने हमला कर दिया। इस कारण आम जनमानस में बाघ की छवि ख़तरनाक जानवर की ही रहती है। यही बात बच्चों के मन में भी रहती है। इसके चलते जानवरों के प्रति संवेदनशीलता उभारने वाला पक्ष छूट जाता है और बहुत-सी किताबों में वह केवल नैतिक उपदेश तक ही सीमित रह जाता है।

किताब के शुरुआती कुछ पृष्ठों के चित्रों व विवरणों में लाइटनिंग और रणथम्भौर के जंगल के गहरे रिश्ते को दिखाया गया। यह रिश्ता

जंगल के साथ-साथ गाँव के लोगों से भी है। वह कहीं पढ़ने वाले को यह संकेत भी देता है किसी जंगल का पशु-पक्षियों से क्या रिश्ता है। और इस रिश्ते को कहानी आगे और पुष्ट करती है और हमारी जानवरों के प्रति पूर्व मान्यताओं पर विचार करने और जानवरों को एक फ़र्क नज़रिए से देखने का मौक़ा देती है।

किसी स्कूल में बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत शुरू करते है तो वे लाइटनिंग को शेर, चीता, टाइगर आदि बताते हैं। लेकिन पढ़ते हुए होने वाली बातचीत के दौरान वे समझ पाते हैं कि वह एक बाघिन है। एक विद्यालय में जब इस किताब को पढ़कर बच्चों को अनुमान लगाने का मौक़ा दिया गया कि लाइटनिंग जंगल में घूम रही है, पानी पीने जा रही है, पेड़ के नीचे बैठी हुई है तो अब कहानी में आगे क्या होगा? इसपर बच्चे कहते हैं कि यह किसी जानवर पर हमला कर देगी। आगे कहानी में होता इसका उलटा है और लाइटनिंग स्वयं एक कुएँ में गिर जाती है। बच्चे हतप्रभ होकर सोचने लगते हैं कि सब अच्छा-अच्छा चल रहा था! यह एकदम से क्या हो गया? बच्चे जो पहले उजले चित्र देख रहे थे और उन्हें देखकर ख़ुश हो रहे थे, तभी आगे का चित्र काला हो जाता है और बच्चों के बीच उदासी छा जाती है।

जब वे कुएँ के अन्दर का चित्र देखते हैं जिसमें लाइटनिंग गिर जाती है तो उन्हें झटका लगता है और वे सकते में आ जाते है। आगे वे और शिद्दत से लाइटनिंग के साथ होते हैं कि अब वह कैसे बचेगी? अब क्या होगा? यह कशमकश उन्हें बाँधे रहती है। आगे उनका यह अनुमान तब पक्का होता है कि गाँव वाले वहाँ इकट्ठा हो गए हैं और एक गाँव वाला मोबाइल से फ़ोन भी कर रहा है। तब उन्हें लगता है कि अब यह बच जाएगी। इस प्रकार यह किताब उन्हें बाँधे रहती है।

जब किताब के नाम के बारे में बच्चों से चर्चा होती है तो वे थोड़ा सोचते हैं और कहते हैं कि इसकी आँखें वैसी ही चमकती होंगी जैसी रात में बिल्ली की चमकती हैं, तभी इसका नाम *लाइटनिंग* पड़ा होगा। फिर उनसे यह बात होती है कि हो सकता है जब यह ज़ोर से दहाड़ मारती हो तो पानी बरसने के दौरान बिजली की गड़गड़ाहट होती हो और लाइट चमकती हो इसलिए इसका नाम यह पड़ा हो।

किताब की विषयवस्तु व साज-सज्जा को देखते हुए यह समझ में आता है कि यह पुस्तक छोटे बच्चों को किताब पढ़कर सुनाने की दृष्टि से एक उपयुक्त किताब है। इसको बच्चों को सुनाते हुए उनसे बात की जा सकती

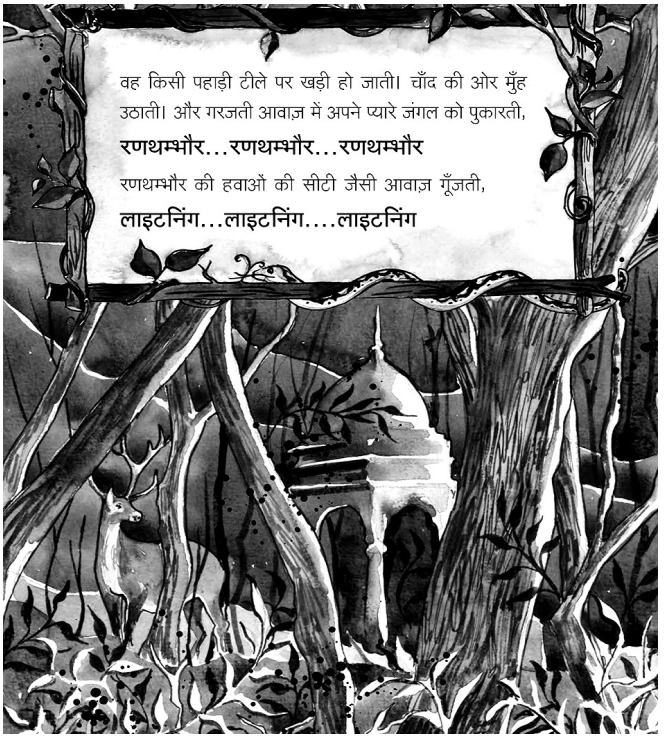

है, अनुमान लगाने के मौक़े दिए जा सकते हैं, उन्हें चित्रों को ध्यान से देखना सिखाया जा सकता है और इनकी बारीक़ियों पर बातचीत की जा सकती है। इसपर बच्चों को अपने अनुभव जोड़ने व आगे सोचने को कहा जा सकता है और चर्चा की जा सकती है। कुल मिलाकर इसे बच्चों को किताब पढ़कर सुनाने वाली किताबों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

रणथम्भौर के जंगल के आसपास के अनुभवों के आधार पर प्रभात द्वारा लिखी गई छोटी-सी कहानी को एलन शॉ ने काफ़ी श्रम और जतन से चित्रित किया है। बिग बुक बनाने की दृष्टि से इसके सम्पादन पर भी मेहनत की गई है। इस किताब को तक्षशिला प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। किताब का मूल्य साढ़े चार सौ रुपए है। किताब के काग़ज़, मुद्रण व चित्रों की गुणवत्ता की दृष्टि से इसे स्कूलों में रखा जाना आवश्यक लगता है।

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।

सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org